हमारी गाय जनी

अभिलाषा राजौरिया

चित्र
रमेश हेंगाडी
संकेत पेठकर

बुक डिज़ाइन
सौमित्र रानडे

IDC, IIT BOMBAY
एकलव्य

हमारी गाय जनी

अभिलाषा राजौरिया

चित्र

रमेश हेंगाडी

संकेत पेठकर

बुक डिज़ाइन

सौमित्र रानडे

IDC, IIT BOMBAY

एकलव्य

आज सुबह 4 बजे से ही मम्मी का यहाँ से वहाँ आना-जाना और कुछ-कुछ खटर-पटर करना लगा था।

मेरी नींद तो खुल-सी गई थी, पर मैं आलसी जो ठहरी। रज़ाई में मुँह छिपाकर सोती रही। पूछा भी नहीं, “मम्मी आप इतनी जल्दी क्यों उठ गई।” डर यह था कि पूछने पर मुझे ही कुछ काम पर न लगा दें।

करीब 5 बजे मेरी छोटी बहन प्रियंका अपनी बाज़ू में मम्मी को न पाकर रोने लगी। उसका रोना सुनके मम्मी ने उसे समझाते हुए कहा, "प्रियंका बेटी आज अपने यहाँ छोटा-सा 'मन्ना' आया है।"

“सच मम्मी!” यह कहते हुए मैं भी बिस्तर से उछल पड़ी।
मम्मी बोली, “हाँ-हाँ बेटे! प्रियंका को तुम ले चलो।
मैं ज़रा गरम पानी कर लूँ।”

हम दोनों बहनें वहाँ गए, जहाँ गाय बँधी थी। बच्चा उसके सामने था। गाय उसे चाट-चाटकर साफ कर रही थी। इतने में मेरा छोटा भाई नीतेश भी उठ गया।

अब हम तीनों यह सोचने लगे कि ‘मन्ना’ को कैसे अपने पास लाएँ, क्योंकि गाय तो हमें मारने दौड़ रही थी।

भैया बोला, “दीदी, अपनी नन्दा तो कभी मारती ही नहीं है। आज यह मारने क्यों दौड़ रही है?”

इतने में पापाजी मुँह-हाथ धोकर आ गए। वह भी 3-4 बजे से लगे थे। हम लोगों को उत्सुक देखकर बड़े प्रसन्न हुए। बोले, “कहो बच्चो, अपने घर कौन आया है?”

भैया ने पूछा, “पापा, आज नन्दा मारने क्यों दौड़ रही है?”
पापा ने कहा, “बेटा, गाय को अपने बच्चे पर स्नेह होता है।
सोचती है, ये लोग मेरे बच्चे को मारेंगे तो नहीं?
इसलिए पास नहीं आने देती।”

मैंने पूछा, “क्यों पापा, आज मंगलवार है?”
पापा ने कहा, “हाँ है! क्यों?”

“तब तो पापा हम अपने मन्ने का नाम मंगला ही रखेंगे ना!” मैं बोली।

इस पर पापा बड़े खुश हुए। मम्मी को बताते हुए कहा, “भई, बच्चों ने तो बच्छे का नामकरण भी कर लिया। अब इसी खुशी में चाय मिल जाए। चार घण्टे से परेशान हो रहे हैं।”

इतने में मम्मी चाय का प्याला लिए ही आ गई।

हम सभी को निर्देश देकर अन्दर
भेजा कि जाओ तुम लोग मुँह-हाथ
धोकर दूध पियो।

दूध पीकर हम लोग फिर गाय के
पास आ गए थे। और कहीं मन ही
नहीं लग रहा था।

अब मंगला नहा चुका था और आँगन में बैठा
था। हम तीनों भाई-बहन उसे हाथ
फेर-फेरकर खिला रहे थे।

प्रियंका तो भूसा उठा लाई और हाथों में रखकर उसके
मुँह के पास ले गई।
कहने लगी, “खा लो मंगला, तुम्हें भूख नहीं लगी?”

तब माँ ने समझाया,
“बेटा, वो अभी दूध ही पीता है।
छोटा है ना! इसलिए भूसा नहीं खाता।”

हम लोगों का मन स्कूल जाने का नहीं हो रहा था। पर क्या करें, छमाही परीक्षाएँ पास ही आ गई थीं।

अत: मम्मी के समझाने पर मन मारकर स्कूल रवाना हुए।

उस दिन स्कूल में भी मन नहीं लगा।

शाम को स्कूल से आते ही बस्ते टेबल पर डालकर मंगला
के पास पहुँच गए।

मंगला अब सुबह वाला मंगला नहीं रह गया था।
हाथ रखते ही उठ खड़ा हुआ।

फिर तो उसने उछलना शुरू कर दिया।

हम लोग रात तक उसी के पीछे पड़े रहे। बार-बार मम्मी-पापा के ज़िद करने पर सोए। ऐसा था हमारा यह दिन, जिस दिन हमारी नन्दा गाय जनी।

आज सुबह 4 बजे से ही मम्मी का यहाँ से वहाँ आना-जाना और कुछ-कुछ खटर-पटर करना लगा था। मेरी नींद तो खुल-सी गई थी, पर मैं आलसी जो ठहरी। रज़ाई में मुँह छिपाकर सोती रही। पूछा भी नहीं, "मम्मी आप इतनी जल्दी क्यों उठ गई।" डर यह था कि पूछने पर मुझे ही कुछ काम पर न लगा दें।

करीब 5 बजे मेरी छोटी बहन प्रियंका अपनी बाज़ू में मम्मी को न पाकर रोने लगी। उसका रोना सुनकर मम्मी ने उसे समझाते हुए कहा, "प्रियंका बेटी, आज अपने यहाँ छोटा-सा 'मन्ना' आया है।

"सच मम्मी!" यह कहते हुए मैं भी बिस्तर से उछल पड़ी।

मम्मी बोली, "हाँ-हाँ बेटे! प्रियंका को तुम ले चलो। मैं ज़रा गरम पानी कर लूँ।"

हम दोनों बहनें वहाँ गए, जहाँ गाय बँधी थी। बच्चा उसके सामने था। गाय उसे चाट-चाटकर साफ कर रही थी। इतने में मेरा छोटा भाई नीतेश भी उठ गया।

अब हम तीनों यह सोचने लगे कि 'मन्ना' को कैसे अपने पास लाएँ, क्योंकि गाय तो हमें मारने दौड़ रही थी।

भैया बोला, "दीदी, अपनी नन्दा तो कभी मारती ही नहीं है। आज यह मारने क्यों दौड़ रही है?"

इतने में पापाजी मुँह-हाथ धोकर आ गए। वह भी 3-4 बजे से लगे थे। हम लोगो को उत्सुक देखकर बड़े प्रसन्न हुए। बोले, "कहो बच्चो, अपने घर कौन आया है?"

भैया ने पूछा, "पापा, आज नन्दा मारने क्यों दौड़ रही है?"

पापा ने कहा, "बेटा, गाय को अपने बच्चे पर स्नेह होता है। सोचती है, ये लोग मेरे बच्चे को मारेंगे तो नहीं? इसलिए पास नहीं आने देती।"

मैंने पूछा, "क्यों पापा, आज मंगलवार है?"

पापा ने कहा, "हाँ है! क्यों?"

"तब तो पापा हम अपने मन्ने का नाम मंगला ही रखेंगे ना!" मैं बोली।

इस पर पापा बड़े खुश हुए। मम्मी को बताते हुए कहा, "भई, बच्चों ने तो बच्छे का नामकरण भी कर लिया। अब इसी खुशी में चाय मिल जाए। चार घण्टे से परेशान हो रहे हैं।" इतने में मम्मी चाय का प्याला लिए ही आ गई।

हम सभी को निर्देश देकर अन्दर भेजा कि जाओ तुम लोग मुँह-हाथ धोकर दूध पियो।

दूध पीकर हम लोग फिर गाय के पास आ गए थे। और कहीं मन ही नहीं लग रहा था।

अब मंगला नहा चुका था और आँगन में बैठा था। हम तीनों भाई-बहन उसे हाथ फेर-फेरकर

खिला रहे थे।

प्रियंका तो भूसा उठा लाई और हाथों में रखकर उसके मुँह के पास ले गई। कहने लगी, "खा लो मंगला, तुम्हें भूख नहीं लगी?"

तब माँ ने समझाया, "बेटा, वो अभी दूध ही पीता है। छोटा है ना! इसलिए नहीं खाता।"

हम लोगों का मन स्कूल जाने का नहीं हो रहा था। पर क्या करें, छमाही परीक्षाएँ पास ही आ गई थीं।

अतः मम्मी के समझाने पर मन मारकर स्कूल रवाना हुए।

उस दिन स्कूल में भी मन नहीं लगा।

शाम को स्कूल से आते ही बस्ते टेबल पर डालकर मंगला के पास पहुँच गए।

मंगला अब सुबह वाला मंगला नहीं रह गया था। हाथ रखते ही उठ खड़ा हुआ। फिर तो उसने उछलना शुरू कर दिया।

हम लोग रात तक उसी के पीछे पड़े रहे। बार-बार मम्मी-पापा के ज़िद करने पर सोए। ऐसा था हमारा यह दिन, जिस दिन हमारी नन्दा गाय जनी।

हमारी गाय जनी

HAMARI GAI JANI

कहानी: अभिलाषा राजौरिया, पिपरिया (मप्र)
(*चकमक* नवम्बर, 1985 में प्रकाशित)
चित्र: रमेश हेंगाडी, संकेत पेठकर
बुक डिज़ाइन: सौमित्र रानडे

©एकलव्य, भोपाल
इस कहानी का गैर-व्यावसायिक शैक्षणिक उद्देश्य से निशुल्क वितरण हेतु इसी या इसके समान कॉपीलेफ्ट चिह्न के तहत उपयोग किया जा सकता है। स्रोत के रूप में किताब का उल्लेख अवश्य करें तथा एकलव्य को सूचित करें। किसी भी अन्य प्रकार के उपयोग के लिए एकलव्य से सम्पर्क करें।

पहला संस्करण: जून 2013 (5000 प्रतियाँ)
पहला पुनर्मुद्रण: जुलाई 2017 (3000 प्रतियाँ)
दूसरा पुनर्मुद्रण: जनवरी 2018 (3000 प्रतियाँ)
तीसरा पुनर्मुद्रण: अप्रैल 2019 (3000 प्रतियाँ)
चौथा पुनर्मुद्रण: जनवरी 2021 (3000 प्रतियाँ)
पाँचवाँ पुनर्मुद्रण: दिसम्बर 2021 (3000 प्रतियाँ)
छठवाँ पुनर्मुद्रण: अगस्त 2023 (3000 प्रतियाँ)
आईआईटी मुम्बई के इंडस्ट्रियल डिज़ाइन सेंटर के डमरू प्रोजेक्ट में पराग इनिशिएटिव, टाटा ट्रस्ट मुम्बई के वित्तीय सहयोग से विकसित
कागज़: 100 gsm मेपलिथो व 300 gsm पेपर बोर्ड (कवर)
ISBN: 978-93-81300-56-5
मूल्य: ₹ 70.00

प्रकाशक: **एकलव्य फाउंडेशन**
जमनालाल बजाज परिसर
जाटखेड़ी, भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72
www.eklavya.in / books@eklavya.in

मुद्रक: आर के सिक्युप्रिंट, भोपाल; फोन: +91 755 256 7589

IDC, IIT BOMBAY

एकलव्य

parag

मूल्य: ₹ 70.00

9789381300565